

करेले के मधुमेह रोधी गुण प्रमाणित

आयुर्वेद में तो करेले के औषधीय गुणों का महत्व रहा है। अब मुंबई स्थित के.एम. कुंदनानी कॉलेज ऑफ फार्मसी के औषधि विज्ञान विभाग और पुणे स्थित सिंहगढ़ औषधि विज्ञान संस्थान के वैज्ञानिकों ने न सिर्फ करेले के रस में मधुमेह-रोधी गुणों को प्रमाणित किया है बल्कि इसके चिकित्सकीय उपयोग को मानकीकृत भी किया है।



नफीसा पी.सी. फर्नांडीज़ व उनके साथियों द्वारा कॉम्प्लीमेंट्री एण्ड आल्टर्नेटिव मेडिसिन के हाल के अंक में प्रकाशित शोध पत्र में चूहों पर किए गए प्रयोगों का ब्यौरा देते हुए बताया गया है कि उनके द्वारा मानकीकृत रस दिए जाने पर चूहों में इन्सुलिन बनाने वाली कोशिकाएं *आइलेट्स ऑफ लैंगरहैन्स* सक्रिय होकर अपना काम करने लगती हैं। इसके अलावा रस का यह प्रभाव भी देखा गया कि लीवर में ग्लायकोजन को शक्कर में तबदील करने की क्रिया में भी कमी आई और कोशिकाओं द्वारा ग्लूकोज़ का उपयोग भी बढ़ गया। और तो और, सीरम प्रोटीन का स्तर भी बढ़ा।

गौरतलब है कि कतिपय मधुमेह के रोगियों में इन्सुलिन के अभाव के चलते कोशिकाएं रक्त से ग्लूकोज़ का अवशोषण नहीं कर पातीं। परिणाम यह होता है कि शरीर यही समझता है कि ग्लूकोज़ की कमी है और लीवर अपने अंदर संग्रहित ग्लायकोजन को भी ग्लूकोज़

में बदलने लगता है।

शोधकर्ताओं ने पाया कि करेले का यह मानकीकृत रस मुंह से लिया जा सकता है। उनका यह भी निष्कर्ष है कि इस रस के सेवन से *एथीरोस्क्लेरोसिस* की भी रोकथाम हो सकती है। *एथीरोस्क्लेरोसिस* रोग में व्यक्ति की धमनियां कड़ी हो जाती हैं तथा उनमें लचीलापन समाप्त हो जाता है।

वैकल्पिक चिकित्सा की दृष्टि से यह एक उत्साहवर्धक समाचार है। वैसे अभी प्रयोग सिर्फ चूहों पर हुए हैं, इन्सानों पर प्रयोग इसके बाद आएंगे। मगर करेला तो एक खाद्य पदार्थ भी है, इसलिए इसका सेवन जांचा-परखा है और लोग शायद इसका प्रयोग करते भी रहे हैं। (**स्रोत विशेष फीचर्स**)